पवित्र जीवन

मौलाना वहीदुद्दीन खान

अनुक्रम

बिस्मिल्लाहिर्रहमानेरहीम

इस्लाम के प्रमुख और संक्षिप्त परिचय के लिये किताबों के एक सेट की ज़रूरत आम तौर पर महसूस की जाती रही है. यह सेट बच्चों के लिये पाठ्यक्रम शिक्षा के तौर पर इस्तेमाल होगा. और इसी के साथ बड़ों के बीच इस्लाम का परिचयात्मक अध्ययन भी फ़ायदा पहुंचायेगा.

इस सिलसिले में ख़ुदा के फ़ज़्ल और उसकी मेहरबानी से पांच संक्षिप्त किताबों का एक सेट तैयार हो गया है. यह सेट क्रमशः इस प्रकार है:

१. सत्य मार्ग

२. मज़हबी शिक्षा

३. पवित्र जीवन

४. जन्नत का बाग़

५. जहन्नम की आग

प्रस्तुत रिसाला (पवित्र जीवन) इस क्रम की तीसरी किताब है. पहले यह संपूर्ण सेट क्रमशः १. सच्चा रास्ता, २. दीनी तालीम, ३. हयात-ए-तयियबा, ४. बाग़-ए-जन्नत, ५. नार-ए-जहन्नम नाम से उर्दू भाषा में प्रकाशित हुआ और अब हिन्दी में पेश किया जा रहा है.

प्रस्तुत पुस्तक पूरी की पूरी कुरआन की आयतों के अनुवाद पर आधारित है. इसमें किसी प्रकार की व्याख्यात्मक वृद्वि नहीं की गई है. कुरआन की आयतों का चयन एक ख़ास क्रम में प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसके हर टुकड़े पर विषय संदर्भ से एक संक्षिप्त शीर्षक जड़ दिया गया है. शीर्षक के सिवा पूरी किताब में संग्राहक ने या अनुवादक ने कोई वृद्वि नहीं की है. इस प्रकार यह पुस्तिका इस्लाम के परिचयात्कम आधारों का एक प्रमाणिक और सटीक संग्रह बन गया है.

उर्दू में इस किताब का नाम 'हयात-ए-तय्यिबा' है जो सूरः अन-नहल की ९७ वीं आयत से लिया गया है. उस आयत का अनुवाद है:- ''जो कोई नेक काम करेगा, तो हम उसको दुनिया में 'अच्छा जीवन' प्रदान करेंगे और

आख़िरत में उनके अच्छे कर्मों के बदले उनका बदला प्रदान करेंगे."

इस आयत में अरबी में "हयात-ए-तय्यिबा" शब्द का प्रयोग है. जिसके अर्थ पर से आयत के दूसरे टुकड़े में पर्दा हटता है. इससे मतलब है सुन्दर कर्मों की जिंदगी. सहाबा और विशेष अनुकारक (ताबईन) आम तौर पर इसका यही अर्थ ग्रहण करते थे, जिसकी पुष्टि ज़ोहाक (बादशाह) के इस वचन से होती है कि इससे अर्थ है – "दुनिया में हलाल रोज़गार पर संतुष्ट रहना और खुदा की इबादत करना." (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

अल्लाह पर ईमान लाना और अल्लाह के आदेशों को पूरा करने में लगाना अपने आप को अल्लाह की मदद का हक़दार बनाना है. जब कोई व्यक्ति ऐसा करता है, तो उसको खुदा की विशेष कृपा मिलनी शुरू हो जाती है. इबादत के वक़्त उसे खुदावंद की निकटता का अनुभव होने लगता है. जिंदगी के मशग़लों में फंसने के बावजूद वह खुदा की याद से अंजान नहीं हो पाता. दुनिया की चीजों में उसे सीख और नसीहत की प्राप्ति होती है. मामलों और मसलों में उसे खुदाई तरीका अपनाने का श्रेय मिलता है. दोस्ती हो या दुश्मनी हर हाल में उसके अंदर यह भावना उभरती है कि वह सत्य पर क़ायम रहे. वह अपनी जिंदगी के हर मामले में उस "सिरात-ए-मुस्तक़ीम" (सच्चे रास्ते) या सत्य मार्ग पर चलने लगता है जो खुदा को पसंद है.

यह 'हयात-ए-तय्यिबा' (पवित्र जीवन) अपने वैचारिक और व्यवहारिक विशेषणों में कैसी होती है इसको कुरआन में बहुत स्पष्ट तौर पर बता दिया गया है. प्रस्तुत पुस्तक में कुरआन की उन आयतों का चयन किया गया है जिनसे पवित्र जिंदगी या पवित्र जीवन के विभिन्न मौलिक आधारों को कुरआन की विशेष शैली में अभिव्यक्ति मिलती है. इस प्रकार यह पंक्तियां और यह गद्य-लेखन 'पवित्र जीवन' का परिचय भी हैं और उसका प्रमाणिक नमूना भी.

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह इन किताबों को एक लाभकारी निमंत्रक और शिक्षाप्रद संग्रह के रूप में उपयोगी सिद्ध करे.

उर्दू भूमिका: २३, मई १९८२

वहीदुद्दीन ख़ान
१८, जुलाई १९९३

अल्लाह एक है

कहो वह अल्लाह एक है. अल्लाह बे नियाज़ है. न उसकी कोई औलाद है, न वह किसी की औलाद है. उसके बराबर कोई नहीं. (सूर: इख़लास) – लोगो इबादत करो अपने रब की, जिसने तुमको और तुमसे पहले वालों को पैदा किया ताकि तुम बच जाओ. वही है जिसने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछौना और आसमान को छत बना दिया और ऊपर से पानी बरसाया. फिर तुम्हारे ग़िज़ा के लिये हर तरह की पैदावार निकाली. बस तुम किसी को अल्लाह का बराबर न ठहराओ. हालांकि तुम जानते हो. (सूर: अल-बक़रा, २१-२२). यक़ीनन अल्लाह उसको नहीं बख़्शेगा कि उसके साथ शिर्क किया जाये. इसके सिवा और गुनाहों को माफ़ कर देगा, जिसे वह माफ़ करना चाहे. जिसने अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराया वह गुमराही में बहुत दूर निकल गया. (सूर: अल-निसाअ, ११६).

सबसे ऊपर, सबसे बड़ा

अल्लाह, इसके सिवा कोई माबूद नहीं. वह ज़िंदा है, सब को थामे हुए है. उसको न ऊंघ लगती है, न नींद आती है. ज़मीन और आसमानों में जो कुछ है उसी का है. कौन है, जो उसके सामने बिना उसकी आज्ञा के सिफ़ारिश कर सके. जो कुछ लोगों के सामने है और जो कुछ उनसे ओझल है सबका उसे ज्ञान है. उसके ज्ञान के किसी कोण पर भी कोई हावी नहीं हो सकता, मगर जो वह चाहे. उसकी सत्ता आसमानों और ज़मीन पर छाई हुई है. इनकी निगहबानी उसके लिये थका देने वाला काम नहीं. वही सबसे ऊपर है, वही सबसे बड़ा. (अल-बक़रा २२५)

अल्लाह की निशानियां

तुम्हार रब अल्लाह है, जिसने आसमानों और ज़मीन को छह दिन में पैदा किया. फिर अपने अर्श पर स्थिर हुआ. वह रात को दिन पर ढ़ांकता

है, दिन रात के पीछे दौड़ा चला आता है. सूरज, चांद और सितारे उसके हुक्म के अधीन है. आगाह, उसी का काम है पैदा करना और उसी के लिये है आदेश देना. बड़ी बरकत वाला है, अल्लाह जो रब है सारे जहान का. अपने रब को पुकारो गिड़गिड़ाते हुए और चुपके-चुपके, यक़ीनन वह हद से गुज़रने वालों को पसंद नहीं करता. ज़मीन में खराबी न डालो उसके सुधार और संशोधन के बाद और अल्लाह को पुकारो डर के साथ और उम्मीद के साथ. बेशक अल्लाह की रहमत नेक काम करने वालों के क़रीब है. और वह अल्लाह ही है जो हवाओं को अपनी रहमत से पहले खुशखबरी लिये हुए भेजता है, यहां तक कि जब वह भारी बादलों को उठा लेती है, तो हम उनको मुर्दाबस्ती की तरफ़ हांक देते हैं, फिर हम उस बादल से पानी निकालते हैं, उसके बाद हम उससे तरह-तरह के फल निकालते हैं, उसी तरह हम मुर्दों को निकालेंगे, ताकि तुम ग़ौर करो – और जो ज़मीन अच्छी होती है, वह अपने रब के हुक्म से अपना-अपना सब्ज़ा निकालती है, और जो ज़मीन खराब होती है, उससे खराब पैदावार के सिवा और कुछ नहीं निकलता, इस तरह हम निशानियों को फेर-फेर कर बयान करते हैं उन लोंगों के लिये जो कृतज्ञ (शुक्र करने वाले) हैं. (सूरः अल-आराफ़ ५४-४८)

आसमानों और ज़मीन में

बस तस्बीह करो अल्लाह की, जबकि तुम शाम करते हो और जबकि तुम सुबह करते हो और उसी के लिये हम्द है आसमानों और ज़मीन में. और उसकी तस्वीह करो तीसरे पहर और जबकि तुम पर जोहर का वक़्त आता है. खुदा जिंदा में से मुर्दा को निकालता है, और मुर्दा में से जिंदा को निकालता है और ज़मीन को उसकी मौत के बाद जिंदगी बख्शता है, इसी तरह तुम लोग भी निकाले जाओगे. उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया. फिर एकाएक तुम बशर (धरती जीव) होकर तुम ज़मीन पर फैल गये और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारे लिये तुम्हारी ही जींस से पत्नियां बनाई ताकि तुम उनके पास सुकून हासिल

करो और उसने तुम्हारे बीच मुहब्बत और रहमत पैदा करदी, यक़ीनन इसमें निशानियां हैं. उन लोगों के लिये जो ग़ौर करते है. और उसकी निशानियों में से है आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और तुम्हारी भाषाओं और तुम्हारे रंगों का भेद, यक़ीनन इसमें निशानियां हैं ज्ञान वालों के लिये और उसकी निशानियों में से है तुम्हारा रात और दिन का सोना और तुम्हारा उसकी कृपा को तलाश करना, यक़ीनन इसमें निशनियां हैं उन लोगों के लिये जो सुनते है. और उसकी निशानियों में से यह है कि वह तुमको बिजली की चमक दिखाता है भय और लालच के साथ, और असामान से पानी बरसाता है फिर उसके जरिये से ज़मीन को उसकी मौत के बाद ज़िंदगी बख्शता है. यक़ीनन इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिये जो बुद्धि वाले हैं. और उसकी निशानियों में से यह है कि आसमान और ज़मीन उसके हुक्म से कायम हैं, फिर जैसे ही उसने तुमको पुकारा, तुम अचानक ज़मीन से निकल आओगे. और आसमानों और ज़मीन में जो भी है, सब उसके बंदे हैं, सब उसी के अधीन हैं. और वही है जो पैदाइश का प्रारंभ करता है फिर वह है जो इसे वापस लेगा, और यह उसके लिये बहुत आसान है. और आसमान और ज़मीन में उसकी सिफ़त (विशेषता) सबसे बढ़कर है और वह जबर्दस्त और हकीम है. (अल-रूम १७-२७)

सृष्टि की पुकार

बेशक अल्लाह दाना और गुठली को फाड़ने वाला है, वह ज़िंदा को मुर्दे से निकालता है. और वही मुर्दे को ज़िंदा से निकालने वाला है, फिर तुम किधर बहके जा रहे हो. वही सुबह को निकालता है. उसने रात को सुकून का वक़्त बनाया है. उसने सूरज और चांद का हिसाब निश्चित कर रखा है. यह सब अजीज़-ओ-अलीम का ठहरा हुआ अंदाजा है. और वही है, जिसने तुम्हारे लिये सितारों को बनाया ताकि तुम उससे खुश्की और समुंदर में रास्ता मालूम करो. हमने निशानियाँ खोल कर बयान कर दी हैं उन लोंगों के लिये जो ज्ञान रखते हैं. और वही है जिसने तुमको एक ज्ञान से पैदा किया. फिर

हर एक के लिये करार (सुकून) की एक जगह है और एक उसके सौंपे जाने की जगह. हमने निशानियाँ खोल कर बयान कर दी है उन लोगों के लिये जो समझ रखते हैं. और वही है जिसने आसमान से पानी बरसाया. फिर हमने उसके ज़रिये से हर प्रकार की (खाने की) सब्ज़ियां उगाई. फिर हमने उससे हरियाली पैदा की जिससे हम तह-ब-तह चढ़े हुए दाने निकालते हैं. और खजूर की कलियों से फलों के गुच्छे जो बोझ से झुके पड़ते हैं, और अंगूर और ज़ैतून और अनार के बाग़ जिनके फल एक दूसरे से मिलते जुलते भी हैं और फिर एक दूसरे से जुदा-जुदा भी. उसके फल को देखो जब वह फलता है और उसके पकने को, उनमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं. और लोगों ने जिन्नों को अल्लाह का शरीक बना लिया. हालांकि ख़ुदा ने उनको पैदा किया है. और उन्होंने ख़ुदा के लिये बेटे बेटियां गढ़ लीं, बिना ज्ञान के. हालांकि वह पाक और बड़ा है इन बातों से जो यह लोग कहते हैं. वह आसमानों ओर ज़मीन का अविष्कारक निर्माता है, उसका कोई बेटा कैसे हो सकता है, हालांकि कोई उसकी पत्नी नहीं. उसने हर चीज़ को पैदा किया है और वह हर चीज़ का ज्ञान रखता है. यह है अल्लाह तुम्हारे रब. इसके सिवा कोई इलाह नहीं. वह हर वस्तु का रचनाकार है, लिहाज़ा तुम उसकी इबादत करो. वह हर चीज़ का ज़िम्मेदार है. दृष्टि उसको नहीं पा सकती और वह दृष्टि को पा लेता है. और वह बारीक देखने वाला और बाख़बर है (सूर: अल-इनआम ९६-१०४).

अर्श-ए-अज़ीम वाला

क्या तुमने यह समझ रखा है कि हमने तुम्हें बेकार पैदा किया है, और तुमको हमारी तरफ़ पलटना नहीं होगा. बस बड़ा है अल्लाह, वास्तविक बादशाह, कोई उसके सिवा माबूद नहीं. वह मालिक है अर्श-ए-अज़ीम का. और जो शख़्स अल्लाह के साथ किसी और माबूद को पुकारे तो उसके पास उसके लिये कोई दलील नहीं, और कहो कि ऐ हमारे रब मग़फ़िरत (बख़्शिश) फ़रमा और रहम कर, तू सबसे ज़्यादा रहम करने वाला है. (सूर: अल-मोमिनून ११५-११८)

मुहब्बत अल्लाह है

बेशक आसमान और ज़मीन की बनावट और रात और दिन के आने जाने में और उन किश्तियों में जो इंसान के मुनाफ़े की चीज़े लिये हुए समुंदरों में चलती हैं और उस पानी में जो अल्लाह ने ऊपर से उतारा फिर उससे ज़मीन को मौत के बाद ज़िंदगी बख़्शी और उसने ज़मीन में हर तरह के जानदार फैला दिये और हवाओं की गर्दिश में और उन बादलों में जो आसमानों और ज़मीनों के बीच उड़ते फिरते हैं, निशानियां हैं अक़्ल वालों के लिये. और लोगों में ऐसे हैं जो अल्लाह के सिवा दूसरों को उसका हमरूतबा बनाते हैं. वह उनसे मुहब्बत करते हैं जैसी मुहब्बत अल्लाह के साथ करनी चाहिये. हालांकि ईमान लाने वाले अल्लाह को सबसे ज़्यादा महबूब रखते हैं. और अगर यह ज़ालिम देख लें उस वक़्त को जबकि वह अज़ाब को देखेंगें कि सारी शक्ति अल्लाह के लिये है और यह कि अल्लाह का अज़ाब बड़ा सख़्त है. जबकि पेरवी करने वालों से वह लोग असंबद्धता ज़ाहिर करेंगे, जिनकी पैरवी की गई थी और वह अजाब को देखेंगे और उनके तमाम सामान टूट जाएंगे और अनुयायी कहेंगे कि काश हमको फिर दुनिया की तरफ़ लौट जाना मिलता तो हम भी उनसे बेज़ारी दिखाते जिस तरह वह हमसे बेजारी जाहिर कर रहे हैं. इस तरह अल्लाह उनके काम उनको हसरत के लिये दिखायेगा और वह हरगिज़ आग से निकल न सकेंगे. ऐ लोगो ज़मीन में जो हलाल और पाक चीज़ें हैं उनमें से खाओ और शैतान की पैरवी न करो, बेशक वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है. वह तुमको बुराई और बेहयाई का हुक्म देता है और यह कि तुम अल्लाह के नाम पर वह बातें कहो जिनको तुम नहीं जानते. (सूरः अल-बक़रा १६४-१६९)

ख़ुदा के पैग़ंबर

जो लोग ईमान लाये और जिन्होंने अपने ईमान को ज़ुल्म के साथ मिलाया नहीं तो उन्हीं के लिये अमन है. और वही हिदायत पाये हुए हैं और यह

हमारी हुज्जत है, जो हमने इब्राहीम को उसकी क़ौम पर दी. हम जिनको चाहते हैं ऊंचे मरतबे प्रदान करते हैं. बेशक तेरा रब हकीम और अलीम है. फिर हमने इब्राहीम को, इसहाक़ और याकुब दिये. हमने हर एक को सीधा रस्ता दिखाया और हमने नूह को इससे पहले सीधा रास्ता दिखाया और उसकी नस्ल में दाऊद और सुलैमान और अययूब और यूसुफ़ और मूसा और हारून को, और हम इसी तरह नेकी करने वालों को बदला देते हैं और इसी तरह ज़कारिया और यहिया और ईसा और इलियास को हिदायत (मार्गदर्शन) दी. उनमें से हर एक परहेज़गार था. और इस्माईल और अलीसा'अ और यूनूस और लूत को भी और उनमें से हर एक को हमने दुनिया वालों पर बड़प्पन दिया. और उनके पूर्वज में और उनकी संतान में और उनके भाइयों में और हमने उनको चुन लिया और उनको सीधे रास्ते की तरफ़ रहनुमाई की. यह अल्लाह की हिदायत है. अल्लाह जिसे चाहता है अपने बंदों में से उसकी तरफ़ रहनुमाई करता है. और अगर वह शिर्क करते तो उनका सारा सुकर्म ग़ारत हो जाता. ये लोग हैं जिनको हमने किताब और हुक्म और नबूवत प्रदान की. अब अगर ये लोग उनका इन्कार करते हैं तो हमने ऐसे लोगों को उस पर नियुक्त कर दिया है, जो उसके मुन्किर नहीं. यही लोग हैं, जिनको अल्लाह ने हिदायत दी, तुम उन्हीं के रास्ते पर चलो. कहो, मैं इस काम पर तुमसे कोई बदला नहीं मांगता. यह तो सिर्फ़ एक नसीहत है दुनिया वालों के लिये. -- (अल इनआम ८३:९१)

जन्नत और जहन्नम

और लोगों ने अल्लाह की क़द्र न की जैसाकि उसकी कद्र करने का हक़ है, और कयामत के दिन ज़मीन उसकी मुट्ठी में होगी और असामान उसके दाहिने हाथ में लिपटे होंगे. वह पाक और ऊपर है उस शिर्क से जो लोग करते हैं. और सूर फूंका जायेगा फिर बेहोश हो जाएंगे, जो आसमानों में है और जो ज़मीन में हैं मगर जिसको अल्लाह चाहे, फिर दूसरी बार सूर फूंका जाएगा तो वह यकायक उठकर देखने लगेंगे. ज़मीन अपने रब के नूर

से चमक उठेगी और किताब लाकर रख दी जायेगी और पैगंबर और गवाह हाज़िर कर दिये जाएंगे और लोगों के बीच हक़ के साथ फ़ैसला कर दिया जायेगा और उनपर ज़ुल्म न होगा. और हर शख़्स को उसके किये का पूरा बदला दिया जायेगा. और अल्लाह लोगों के कर्म से खूब वाक़िफ़ है. और कुफ़्र करने वाले जहन्नम की तरफ़ गिरोह दर गिरोह हांके जाएंगे. यहां तक कि जब वह वहां पहुंचेंगे तो उसके दरवाज़े खोल दिये जाएंगे और उसके कारिंदे उनसे कहेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम्हारे बीच से ऐसे पैग़ंबर नहीं आए जो तुमको तुम्हारे रब की आयतें सुनायें और तुमको इस दिन की मुलाकात से डरायें, वह कहेंगे क्यों नहीं: मगर मुन्किरों के ऊपर खुदा का हुक्म अज़ाब साबित हो गया. कहा जायेगा कि दाखिल हो जाओ जहन्नम के दरवाजों में, हमेशा रहने के लिये. यह एक बुरी जगह है घमंड करने वालों के लिये, और जो लोग अपने रब से डरते थे उन्हें गिरोह दर गिरोह जन्नत की तरफ़ ले जाया जाएगा, यहां तक कि वे जब वहां पहुंचेगें और उसके दरवाज़े खोले जाएंगे और उसके जिम्मेदार उनसे कहेंगे कि तुम पर सलामती हो. तुम बहुत अच्छे आए. बस दाख़िल हो जाओ इसमें हमेशा के लिये. और वह कहेंगे शुक्र है अल्लाह का जिसने हमारे साथ अपना वायदा सच्चा कर दिया और हमको ज़मीन का वारिस बना दिया, हम जन्नत में जहां चाहें अपनी जगह बनाएं. बस क्या खूब बदला है कर्म करने वालों का. और तुम देखोगे कि फ़रिश्ते अर्श के गिर्द घेरा बनाए हुए अपने रब की हम्द तस्बीह कर रहे हैं और लोगों के बीच हक़ के साथ फ़ैसला कर दिया जायेगा, कि सारी तारीफ़ अल्लाह के लिये है, जो रब है सारे जहान का. (सूर: अल-ज़ुमर ६७-७५)

नमाज़

मैं ही अल्लाह हूं, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं बस मेरी बंदगी कर और नमाज़ क़ायम कर मेरी याद के लिये -- (ताहा - १४). नमाज़ कायम कर दिन ढ़ले से लेकर रात के अंधेरे तक. और फ़जिर (सवेरे) के वक़्त कुरआन. बेशक फ़जिर का कुरआन 'मशहूद' (गवाह) होता है. और रात के वक़्त

तहज्जुद पढ़ो. यह तुम्हारे लिये नफ़िल है, क़रीब है कि तेरा रब तुझको मुक़ाम-ए-महमूद पर उठाए – (बनी-इस्राईल - ७८-७९) और नमाज़ क़ायम करो दिन के दोनों सिरों पर और कुछ रात गुज़रने पर. बिलाशुब्हा नेकियां बुराइयों को दूर कर देती हैं, यह एक याददिहानी है उन लोंगों के लिये जो नसीहत पकड़े, और सब्र करो अल्लाह नेकी करने वालों का (सुफल) अज्र बर्बाद नहीं करता. (सूरः हूद - ११४ः११५) अपनी नमाज़ों की निगरानी करो, और बीच की नमाज़ की, और अल्लाह के आगे झुक कर खड़े हो - (अल-बक़रा - २३८). और जब नमाज़ से फारिग़ हो जाओ तो खड़े और लेटे और बैठे हर हाल में अल्लाह को याद करते रहो और जब तुम को इत्मीनान हो जाए तो फिर नमाज़ कायम करो. बिलाशुब्हा नमाज़ ईमान वालों पर वक़्त के साथ फर्ज़ की गई है - (सूरः अल निसाअ - १३०). पढ़ो उस किताब को जो तुम्हारी तरफ़ वहय की गयी है, और नमाज़ कायम करो. यक़ीनन नमाज़ फुहश और बुरे कामों से रोकती है. और अल्लाह का जिक्र सबसे बड़ी चीज़ है, जो कुछ तुम लोग करते हो - (सूरः अल अनकबूत - ४५).

रोज़ा

ऐ ईमान वालो तुम पर रोज़े फर्ज़ किये गये, जिस तरह तुमसे अगलों पर फ़र्ज़ किये गये थे, ताकि तुम परहेजगाार बनो. गिनती के चंद दिन हैं, फिर जब कोई तुममें से बीमार हो या सफ़र पर हो तो वह दूसरे दिनों में उतनी ही संख्या पूरी कर ले. और जो लोग रोजा रखने की शक्ति रखते हैं उनके ज़िम्मे फ़िदिया (नक़द जुर्माना) है. एक रोज़े का बदला एक मिस्कीन को खाना खिलाना. और जो अपनी खुशी से ज़्यादा दे तो यह उसके लिये बेहतर है. और अगर तुम रोज़ा रखो तो यह तुम्हारे लिये बेहतर है, अगर तुम समझो – रमज़ान का महीना, इसमें कुरआन उतारा गया जो इंसानों के लिये हिदायत है और रौशन दलीलें हैं, राह पाने की और हक़ को बातिल से जुदा करने की. बस तुम में से जो शख़्स इस महीने को पाये तो वह ज़रूर इसका रोज़ा रखे. और जो शख़्स बीमार हो या मुसाफ़िर हो तो वह दूसरे

दिनों में संख्या पूरी कर ले. अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी चाहता है, वह तुम्हारे लिये दुश्वारी नहीं चाहता, और ताकि तुम रोज़ों की गिनती पूरी कर लो और ताकि तुम अल्लाह की बड़ाई करो इस बात पर कि उसने तुमको हिदायत दी. और ताकि तुम कृतज्ञ बनो. और जब मेरे बंदे तुमसे मेरे बारे में पूछें तो कह दो कि मैं उनसे क़रीब हूं, पुकारने वाला जब मुझे पुकारता है मैं उसकी पुकार को सुनता हूं और जवाब देता हूं बस उन्हें चाहिये कि वह मेरी पुकार पर लब्बैक (समर्थन) कहें, और मुझ पर ईमान लाएं, ताकि वह सीधे रास्ते को पा लें. - (अल-बक़रा १८३-८५)

ज़कात

ऐ ईमान वालो जो कुछ हमने तुमको दिया है, उसमें से ख़र्च करो, इससे पहले कि वह दिन आए, जिसमें न ख़रीद-बिक्री होगी और न दोस्ती काम आयेगी, और जो इन्कार करने वाले हैं वही दर असल ज़ालिम हैं. (अल-बक़रा २५४) जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में खर्च करते हैं, उनकी मिसाल ऐसी है, जैसे एक दाना बोया जाये और उससे सात बालें निकलें और उसकी हर बाली में १०० दानें हों. और अल्लाह बढ़ाता है, जिसके लिये चाहता है और अल्लाह बड़ी व्यापकता वाला है सब कुछ जानने वाला है. जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में खर्च करते हैं, फिर खर्च करने के बाद न एहसान जताते हैं और न दुख देते हैं उन्हीं के लिये अल्लाह का सवाब है उनके रब के पास उनके लिये न कोई डर है, और न वह ग़मगीन होगे. नर्म जवाब देना और बात को दरगुजर करना उस ख़ैरात से बेहतर है जिसके पीछे दिल दुखाने का कर्म लगा हुआ हो. और अल्लाह बेनियाज़ और धैर्य वाला है. ऐ ईमान वालो एहसान जता कर और दुख देकर अपनी खैरात को अकारत न करो उस व्यक्ति की तरह, जो अपना माल दिखाने के लिये खर्च करता है और अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखता. उसकी मिसाल ऐसी है, जैसे एक चट्टान हो जिस पर कुछ मिट्टी हो, फिर जब उसपर जोर का मेंह बरसा तो मिट्टी बह गई और साफ़ चट्टान रह गई. ऐसे लोग अपनी

कमाई से कुछ भी हासिल न कर सकेंगे और अल्लाह मुन्किरों को सीधी राह नहीं दिखाता. और उन लोंगों की मिसाल जो अपने माल अल्लाह की खुशी प्राप्त करने के लिये और अपने दिलों को साबित करके खर्च करते हैं, उस बाग़ की तरह है, जो बुलंद ज़मीन पर हो, उस पर जोर की बारिश हुई तो वह दुगुना फल लाया और अगर बारिश न हुई तो फुवार ही काफी है. और अल्लाह खूब देख रहा है. जो कुछ तुम करते हो. क्या तुममें से कोई पसंद करेगा कि उसके पास खुजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो, उसके नीचे नहरें बहती हों. उस बाग में उसके लिये हर क़िस्म के फल हो और उस पर बुढ़ापा आ जाये. और उसके बच्चे कमजोर हों. उस वक़्त बाग़ पर एक बगूला आ पड़े जिसमें आग हो और वह बाग़ जल जाये. अल्लाह इस तरह अपनी बातें तुम्हारे सामने बयान करता है, ताकि तुम सोचो. ऐ ईमान वालो अपने कमाये हुए सुथरे माल में से खर्च करो और उन चीज़ों में से खर्च करो जो हमने तुम्हारे लिये ज़मीन से पैदा की हैं. ऐसा न हो कि उसकी राह में देने के लिये बुरी चीज़ छांटने लगो, हालांकि वही चीज़ अगर तुम्हें लेना हो तो तुम हरगिज़ लेना गवारा न करो, मगर यह कि आंखें चुरा जाओ. और जान लो कि अल्लाह बेनियाज है, खूबियों वाला है. शैतान तुमको (गरीबी मुफलिसी से) तंग हाथ से डराता है और बेहयाई की राह सुझाता है. और अल्लाह तुमको वादा देता है अपनी बख्शिश और कृपा का. और अल्लाह व्यापकता वाला जानने वाला है. वह जिसको चाहता है, हिकमत प्रदान करता है. और जिसको हिकमत मिली उसको बहुत बड़ी खूबी मिल गई और नसीहत वही कुबूल करते हैं जो अक़्ल वाले हैं (२६१-६९).

उमरा और हज

हज और उमरा को पूरा करो अल्लाह के लिये. और अगर तुम रोक दिये जाओ तो जो कुर्बानी मयस्सर आए उसी को पेश कर दो और अपने सिर न मूंडो जब तक कि कुर्बानी अपने ठिकाने न पहुंच जाये. मगर जो शख़्स मरीज़ हो या उसको सिर की तकलीफ हो तो उसके लिये जुर्माना (फ़िदिया)

है रोज़े रखना, या सदका देना या कुर्बानी करना, फिर जब तुमको अमन हो जाये तो जो शख़्स हज के साथ उमरा को मिलाये तो उस पर कुरबानी है, जो उसे मयस्सर आए. और अगर कुर्बानी मयस्सर न हो तो तीन रोज़ हज के ज़माने में और सात घर पहुंच कर, इस तरह वह पूरे दस रोज़े रख ले. यह हुक्म उसके लिये है, जिसका घर मस्जिद-ए-हराम के क़रीब न हो. और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है. हज के चंद मालूम महीने हैं. जो शख़्स इन महीनों में हज की नीयत करे तो उसके लिये हज के दौरान में कोई काम-भोग या कोई कुकर्म और कोई लड़ाई-झगड़े की बात जायज़ नहीं. और जो नेकी तुम करते हो अल्लाह उसको जानता है. और राह ख़र्च ले लिया करो. सबसे बेहतर राह ख़र्च तक़वा है बस मुझसे डरो ऐ अक़्ल वालो. तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम अपने रब की कृपा ढूढ़ों, फिर जब अराफ़ात से चलो तो मश्अर-ए-हराम (मिज़दल्फा) के पास ठहर कर अल्लाह को याद करो और उसे इस तरह याद करो जैसा कि उसने तुम्हें सिखाया है, वर्ना इससे पहले तुम भटके हुए लोग थे. उसके बाद तवाफ़ (परिक्रमा) के लिये फिरो जहां से सब लोग फिरें और अल्लाह से माफ़ी चाहो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है. फिर जब अपने हज के कर्मकाण्ड (अरकान) पूरे कर लो तो अल्लाह को याद करो जैसे कि तुम अपने बाप दादा को याद करते थे, बल्कि इससे भी ज़्यादा याद करो. बस कोई है, जो कहता है कि ऐ हमारे रब हमको दुनिया में दे दे, और उसके लिये आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं. और कोई कहता है कि ऐ हमारे रब हमको दुनिया में भलाई दे दे और आख़िरत में भलाई दे और हमको आग के अजाब से बचा. यही लोग अपनी कमाई के मुताबिक हिस्सा पाएंगे और अल्लाह जल्द हिसाब करने वाला है. और अल्लाह को याद करो गिनती के चंद दिनों में फिर जो शख़्स दो ही दिन में जल्दी चला गया तो उस पर गुनाह नहीं और जो शख़्स ठहर गया तो उस पर भी कोई गुनाह नहीं. इसके लिये जो अल्लाह से डरे, और अल्लाह से डरते रहो और जान लो कि तुम सब उसी के पास जमा किये जाओगे – (अल-बकरा १९६-२०३).

क़ुर्बानी

हर उम्मत के लिये हमने क़ुर्बानी का एक क़ायदा मुक़र्रर कर दिया है, ताकि लोग उन जानवरों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उन्हें दिये हैं, बस तुम्हारा ख़ुदा एक ही ख़ुदा है तुम उसके अधीन बनो और भविष्यवाणी कर दो विनयशील लोगों को, जिनका हाल यह है कि जब अल्लाह की चर्चा की जाए तो उनके दिल कांप उठते हैं और मुसीबतों पर सब्र करने वाले और नमाज़ कायम करने वाले और जो कुछ हमने उनको दिया है, उसमें से खर्च करते हैं और क़ुर्बानी के जानवरों को हमने तुम्हारे लिये अल्लाह के प्रेम की अलामत बनाया है, उनमें तुम्हारे लिये भलाई है. बस उन्हें खड़ा करके उनपर अल्लाह का नाम लो, और जब उनकी पीठे ज़मीन पर लग जाएं तो उनमें से खुद भी खाओ और खिलाओं संतोष से बैठने वालों को और उनको भी जो अपनी ज़रूरत बताएं. इन जानवरों को हमने तुम्हारे बस में कर दिया है. ताकि तुम कृतज्ञ बनो. अल्लाह को न उनका गोश्त पहुंचता है और न उनका खून बल्कि अल्लाह को तुम्हारा तक़वा पहुंचता है. इस तरह अल्लाह ने उनको तुम्हारे बस में कर दिया है, ताकि तुम अल्लाह की बड़ाई करो इस बात पर कि उसने तुमको रास्ता बताया और खुशखबरी दे दो नेकी करने वालों को -- (सूरः अल-हज, ३४:३७).

अल्लाह की बंदगी

अल्लाह ही का है, जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और तुम अपने जी की बात को चाहे व्यक्त करो या उसको छिपाओ, अल्लाह बहरहाल तुमसे इसका हिसाब लेगा. फिर वह जिसको चाहेगा बख़्शेगा जिसको चाहेगा अज़ाब देगा. और अल्लाह हर चीज़ पर कादिर है. रसूल इस हिदायत पर ईमान लाया है जो उसके रब की तरफ़ से उस पर उतरी है और मुसलमानों ने भी, सब ईमान लाए हैं अल्लाह और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर. उनका कहना है कि हम अल्लाह के पैगंबरों में तफ़रीक़

(भेद) नहीं करते. और उन्होंने कहा कि हमने सुना और हमने इताअत (आज्ञापालन) की, हम तेरी बख्शिश चाहते हैं. ऐ हमारे रब, और तेरी ही तरफ़ लौटकर आना है. अल्लाह किसी पर उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ नहीं डालता, हर एक को मिलना है जो उसने कमाया और हर एक पर पड़ना है, जो उसने किया. ऐ हमारे रब हमको न पकड़ अगर हम भूलें या चूकें, ऐ हमारे रब तू हम पर वह बोझ न डाल जो तूने हमसे अगलों पर डाला था, ऐ हमारे रब हम पर वह बोझ न रख जिसको उठाने की हमको ताक़त नहीं और हमसे दरगुज़र कर, और हमको बख़्श दे और हम पर रहम फ़रमा, तु ही हमारा मौला है, बस मुन्किरों के मुक़ाबले में हमारी मदद कर. (अल-बक़रा - आख़िर)

शरीयत

तेरे रब ने हुक्म दिया है कि तुम उसके सिवा किसी की इबादत न करो और माता-पिता के साथ नेक सुलूक करो. अगर तुम्हारे पास उनमें से कोई एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो उन्हें उफ़ भी न कहो और न उन्हें झिड़को और उनसे सम्मान और आदर के साथ बात करो और रहम के साथ उनके सामने झुक जाओ. और कहो कि ऐ हमारे उब उनपर रहम फ़रमा जिस तरह उन्हेंने मुझको पाला जब मैं छोटा था. तुम्हारा रब ख़ूब जानता है, जो तुम्हारे दिलों में है. और अगर तुम नेक बन कर रहो तो वह पलट आने वालों को माफ़ कर देता है. और रिश्तेदार को उसका हक़ दो और मिस्कीन को और मुसाफ़िर को, और फिजूल खर्ची न करो. फिजूल खर्ची करने वाले शैतान के भाई हैं और शैतान अपने रब का नाशुकरा (कृतघ्न) है. और अगर तुम्हें उनसे मुंह फेरना हो इस आधार पर कि अभी तुम अल्लाह की उस रहमत को, जिसके तुम उम्मीदवार हो तलाश कर रहे हो तो उनको नर्म जवाब दो. और अपना हाथ न तो गर्दन से बाध लो और न तो बिलकुल खुला छोड़ दो कि तुम मलामतजदा (कुत्सित) बनकर रह जाओ. तेरा रब जिसके लिये चाहता है रिज़्क को खोल देता है और जिसके लिये चाहता है,

उसे प्रतिबंधित करके कम कर देता है. वह अपने बंदों से बाखबर है और उनको देख रहा है. और अपनी औलाद को मुफ़्लिसी के डर से क़त्ल न करो. हम उन्हें भी रिज़्क देते हैं और तुम्हें भी. बेशक उनको क़त्ल करना बड़ा गुनाह है. और ज़िना के क़रीब न जाओ, वह बेहयाई है और बुरी राह. और उस जान को क़त्ल न करो जिसको अल्लाह ने हराम किया है, मगर हक़ के साथ, और जो ज़ुल्म से मारा जाये तो उसके वली (मालिक) को हमने क़सास (बदला) का हक़ दिया है, बस वे क़त्ल करने में हद से न निकलें, उसकी मदद की जायेगी. और यतीम के माल के पास न जाओ मगर जिस तरह कि बेहतर हो यहां तक कि वह अपनी पूरी उम्र को पहुंच जाये और वायदे को पूरा करो. बेशक संकल्प के बारे में पूछा जायेगा. और जब नाप कर दो तो पूरा भरकर दो और तोलो तो ठीक तराज़ू से तौलो, यह बेहतर है और इसका अंजाम अच्छा है. और ऐसी चीज़ के पीछे न लगो जिसका तुम्हें ज्ञान न हो. बेशक कान और आंख और दिल सब के बारे में पूछ होगी. और ज़मीन में अकड़ कर न चलो, तुम ज़मीन को फाड़ नहीं सकते और न पहाड़ों की बुलंदी पर पहुंच सकते हो. इनमें से हर बुरा काम तेरे रब के नजदीक नापसंदीदा है. यह हिकमत की बातें हैं जो तेरे रब ने वहय की हैं, और अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद न बना वर्ना तुम जहन्नम में डाल दिये जाओगे कुत्सित होकर और भलाई से वंचित होकर. (सूर: बनी इस्राईल, २३-३९)

रहमान के बंदे

और रहमान के बंदे वह हैं जो ज़मीन पर नर्म चाल चलते हैं. और जब जाहिल उनसे उलझते हैं, तो वह कह देते हैं, कि तुम को सलाम. और जो अपने रब के हुज़ूर सज्दा और क़याम (खड़े होने) में रातें गुज़ारते हैं और जो कहते हैं कि ऐ हमारे रब हमको जहन्नम के अजाब से बचा ले, उनका अज़ाब तो लिपट जाने वाला है. वह बड़ा ही बुरा ठिकाना और मुक़ाम है. और जो ख़र्च करते हैं, तो न फिजूल ख़र्ची करते हैं और न कंजूसी. बल्कि उनका ख़र्च दोनों के बीच तटस्थता पर होता है. और जो अल्लाह के साथ

किसी माबूद को नहीं पुकारते और वह अल्लाह की हराम की हुई जान को नाहक़ क़त्ल नहीं करते और न वह ज़िना करते हैं और अगर जो कोई यह काम करे वह अपने गुनाह (पाप) का बदला (फल) पायेगा. क़यामत के रोज़ उसको दुहरा अज़ाब दिया जायेगा. और उसी में वह हमेशा ज़िल्लत के साथ रहेगा. जब तक कि न कोई तौबा करे और ईमान लाये और अच्छे कर्म करे तो ऐसे लोगों की बुराइयों को अल्लाह भलाइयों से बदल देगा और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है. और जो व्यक्ति तौबा करे और नेक कर्म करे तो वह अल्लाह की तरफ़ पलट आता है जैसा कि पलटना चाहिये. और वह लोग जो झूठ की गवाही नही देते और जब वह किसी बेकार चीज़ पर गुज़रते हैं तो शराफ़त के साथ गुजर जाते हैं. और जिन्हें अगर उनके रब की आयतों से नसीहत की जाये, तो वह उस पर अंधे बहरे की तरह नहीं गिरते. और जो कहते हैं कि ऐ हमारे रब हमको हमारी पत्नियों से और अपनी औलादों से आंखों की ठंडक दे और हमको परहेजगारों का इमाम बना. यही लोग बालाख़ानों (जन्नत की बालकोनी) में जगह पाऐंगे. क्योंकि उन्होंने सब्र किया और उसमें उनका स्वागत मुस्तैदी के साथ होगा. वह उसमें हमेशा रहेंगे. कितना ही अच्छा है वह ठिकाना और वह मुक़ाम -- (सूरः अल-फ़ुर्क़ान, ६३-७६).

भरोसा अल्लाह पर

अल्लाह, उसके सिवा कोई माबूद नहीं और ईमान वालों को अल्लाह पर ही भरोसा रखना चाहिये. ऐ ईमान लाने वालो तुम्हारी पत्नियों और तुम्हारी औलाद में तुम्हारे दुश्मन हैं, उनसे होशियार रहो और अगर तुम माफ़ कर दो और दरगुजर करो और बख़्श दो तो अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है. तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद एक आज़माइश हैं. और अल्लाह के ही पास बड़ा अजर (बदला) है. बस अल्लाह से डरो जितना तुम्हारे बस में है और सुनो और आज्ञापालन करो और अपने माल खर्च करो, यह तुम्हारे लिये बेहतर है. और जो अपने दिल की तंगी से सुरक्षित रहा तो ऐसे ही

लोग कामयाब होने वाले हैं. अगर तुम अल्लाह को (अपनी ओर से) कर्ज़-ए-हसन दो तो वह तुमको कई गुना बढ़ाकर देगा. और तुमको बख़्शा देगा. अल्लाह कद्रदान और बुर्दबार है वह हाज़िर और ग़ायब जानने वाला है, और बोध्दिक और ज़बर्दस्त है. – (अल-तग़ाबन, १३-१८).

हिकमत की बातें

और जब लुकमान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा ऐ बेटे अल्लाह के साथ किसी को शरीक न कर. शिर्क बिलाशुब्हा बड़ा जुल्म है और हमने इंसान को उसके माता-पिता के बारे में ताकीद की. उसकी मां ने कमजोरी पर कमज़ोरी की तकलीफ़ उठाकर उसको पेट में रखा और उसका दूध छूटने में दो साल लगे, यह कि मेरा शुक्र करो अपने माता-पिता का, मेरी ही तरफ़ पलट कर आना है. और अगर वह तुम पर दबाव डालें कि तुम मेरे साथ किसी ऐसे को शरीक करो जिसको तुम नहीं जानते तो उनकी बात न मानना और दुनिया में उनके साथ नेक बर्ताव करो और अनुकरण उस व्यक्ति के रास्ते की करो जिसने मेरी तरफ़ ध्यान किया. फिर तुम सब को मेरी तरफ़ पलटना है, उस वक़्त मैं तुमको बता दूंगा कि तुम कैसे कर्म कर रहे थे. ऐ बेटे कोई चीज़ राई के दाने के बराबर हो, वह किसी चट्टान में हो, या आसमानों में या ज़मीन में. अल्लाह उसको निकाल लायेगा, वह लतीफ़ और ख़बर रखने वाला है. बेटे नमाज़ क़ायम कर और नेकी का हुक्म दे और बुराई से मना कर, और जो मुसीबत पड़े उसपर सब्र कर, बेशक यह हिम्मत के काम हैं. और लोगों से मुंह न फेर और ज़मीन में अकड़ कर न चल, अल्लाह किसी खुदपसंद और घमंड करने वाले को पसंद नहीं करता. और अपनी चाल में मध्यस्थता लाओ. और अपनी आवाज को धीमा रख. सब आवाजों से बुरी आवाज गधे की आवाज है. (सूरः लुक़मान, १३-१९)

अल्लाह से डरने वाले

लोग तुमसे इन्फ़ाल (लड़ाई में लूट का माल बांधना) के बारे में पूछते हैं, कहो कि इन्फ़ाल अल्लाह और उसके रसूल के लिये है. बस तुम लोग अल्लाह से डरो और आपस के मामले ठीक रखो और अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करो. अगर तुम मोमिन हो. ईमान वाले तो वह हैं कि जब अल्लाह का जिक्र किया जाये तो उनके दिल लरज जाते हैं. और जब अल्लाह की आयतें उनके सामने पढ़ी जाएं तो उनका ईमान बढ़ जाता है, और वह अपने रब पर भरोसा रखते हैं. वह नमाज़ क़ायम करते हैं. और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं. यही लोग सच्चे मोमिन है. इनके लिये इनके रब के पास बड़े दर्जे हैं और बख़्शिश है, और बेहतरीन रिज्क़ (अनाज) है. (सूरः अल-इन्फ़ाल, १-४)

पवित्र जीवन

अल्लाह हुक्म देता है इंसाफ़ और भलाई का और कराबत वालों के साथ रहम के व्यवहार का और वह मना करता है बेहयाई से, और बदी से और ज्यादती से. अल्लाह तुमको नसीहत करता है ताकि तुम सबक़ लो और अल्लाह के अहद् (संकल्प/वायदा) को पूरा करो. अह्द करने के बाद और अपने संकल्पों को पक्का करने के बाद न तोड़ो, जबकि तुम अल्लाह को अपने ऊपर जामिन (गवाह) बना चुके हो. अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो. और तुम उस औरत की तरह न हो जाओ जिसने मेहनत से सूत काता और फिर उसको तोड़ डाला. तुम अपनी कस्मों को एक दूसरे के मामलों में दखल देने का बहाना बनाते हो ताकि एक गिरोह दूसरे गिरोह से बढ़ जाये. बेशक अल्लाह उसके ज़रिये तुमको परखता है. और वह क़यामत के दिन तुम्हारे विरोधी मतभेद की हक़ीक़त खोल देगा. और अगर अल्लाह चाहता है तो वह तुम सबको एक उम्मत बना देता है. मगर वह जिसको चाहता है सीधा रास्ता दिखा देता है. और ज़रूर तुमसे तुम्हारे कर्मों की पूछ होगी.

और तुम अपनी क़स्मों को आपस में एक दूसरे को धोका देने का ज़रिया न बनाओ कि कोई क़दम जमने के बाद उखड़ जाये. और तुम उस बात की सजा चखो कि तुमने अल्लाह के रास्ते से रोका. और तुमको बड़ा अजाब हो. और अल्लाह के अहद् (संकल्प) को थोड़े फ़ायदे के बदले न बेचो, जो कुछ अल्लाह के पास है, वह तुम्हारे लिये ज़्यादा बेहतर है. अगर तुम जानो जो तुम्हारे पास है, वह सब खत्म हो जायेगा और जो अल्लाह के पास है, वह हमेशा रहने वाला है. और हम सब्र करने वालों को उनके कर्म का बेहतरीन बदला देंगे. जो शख़्स भी नेक काम करेगा, वह मर्द हो या औरत अगर वह मोमिन है तो हम उसे अच्छी जिंदगी बसर करायेंगे. और उनको उनके बेहतरीन कामों के मुताबिक बदला देंगे. (सूरः अननह्ल, ९०-९७)

हराम और हलाल

कहो, आओ मैं सुनाऊं कि तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिये क्या चीज़ें हराम की हैं. यह कि तुम उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न करो. और मां-बाप के साथ नेक सुलूक करो. और अपनी औलाद को मुफ़्लिसी कि डर से न मार डालो. हम तुमको भी रिज़्क़ देते हैं और उनको भी. बेशर्मी की बातें के क़रीब न जाओ. चाहे वह खुली हों या छिपी और किसी जान को हलाक न करो, जिसको अल्लाह ने हराम ठहराया है, मगर हक के साथ. अल्लाह इन बातों की तुमको हिदायत करता है ताकि तुम सोचो. और यतीम के माल के क़रीब न जाओं. मगर ऐसे तरीके से जो बेहतर हो. यहां तक कि वह अपनी पूरी उम्र को पहुंच जाये. और नाप और तौल में इंसाफ करो. हम किसी शख़्स पर इतनी ही जिम्मेदारी डालते हैं जितना उसके बस में हो. और जब बात कहो तो इंसाफ की बात कहो चाहे अपने रिश्तेदार के ख़िलाफ़ क्यों न हो. और अल्लाह की प्रतिज्ञा को पूरा करो. अल्लाह तुम्हें इनकी हिदायत करता है, ताकि तुम नसीहत पकड़ों, और यही रास्ता मेरा सीधा रास्ता है. तुम इसी पर चलो और दूसरे रास्तों पर न चलो. कि वह अल्लाह के रास्ते से हटा कर तुमको (पृथक) विविध कर देंगे. अल्लाह तुमको इसकी हिदायत करता

है ताकि तुम बचो. (सूरः अल इन्आम, १५४:५५)

कहो, मेरे रब ने जो चीज़ें हराम की हैं, वह यह हैं -- फुहश काम चाहे खुले हो या छिपे और गुनाह और नाहक़ ज़्यादती और यह कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक करो, जिसके लिये उसने सनद (प्रमाण पत्र) नहीं उतारी. और यह कि अल्लाह पर ऐसी बात कहो, जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं. हर गिरोह के लिये एक अवधि है. फिर जब उनकी मुददत आ जाती है तो एक घड़ी की देर या जल्दी नहीं होती. ऐ बनी आदम (आदम की संतान), जब तुम्हारे पास तुम में से रसूल आएं जो तुमको मेरी आयतें सुनाएं तो जो कोई डरेगा और संशोधन/सुधार कर लेगा तो उसके लिये न खौफ़ है और न ग़म. और जो लोग हमारी निशानियों को झुठलाएंगे, और उनकी अवज्ञा करेंगे तो वही आग वाले हैं, जहां वह हमेशा रहेंगे. (सूर: अल-आराफ़, ३३-३६)

जन्नती इंसान

बेशक इंसान बेसब्र पैदा किया गया है. उसपर मुसीबत आती है तो घबरा उठता है. और जब उसे खुशहाली नसीब होती है तो कंजूस बन जाता है, सिवाए उन लोगों के जो नमाज़ पढ़ने वाले हैं. जो अपनी नमाज़ की हमेशा पाबंदी करते हैं. जिनकी संपत्ति में भिक्षुक और वंचितों का निश्चित अधिकार है. और जो सुफल के दिन को सच्चा मानते है ।. और जो अपने रब के अज़ाब से डरने वाले हैं. उनके रब का अज़ाब.

और जो अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करने वाले हैं, बाखबर अपनी पत्नी और अपनी मिल्कियत वाली औरतों सहित कि उनके लिये उनपर कोई निंदा नहीं. अलबत्ता जो उसके अलावा कुछ और चाहें तो वही है हद से निकल जाने वाले. और जो अपनी अमानतों की और अपनी प्रतिज्ञा की हिफ़ाज़त करते हैं और जो अपनी गवाहियों में सच्चाइयों पर कायम रहते हैं और जो अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करते हैं, यही लोग इज्जत के साथ जन्नत के बागों में रहेंगे. (सूरः अल-मेअराज, १९:३५)

इत्मिनान वाली रूह

इंसान का हाल यह है कि उसका रब उसको आजमाता है और असको इज़्ज़त और नेमत देता है तो वह कहता है कि मेरे रब ने मुझको इज़्ज़तदार बनाया और जब उसको दूसरी तरह आजमाता है और उसकी रोजी उसपर तंग कर देता है तो वह कहने लगता है कि मेरे रब ने मुझको जलील कर दिया. हरगिज नहीं. बल्कि तुम लोग यतीम के साथ इज्जत का सुलूक नहीं करते. मीरास (विरासत) का माल समेटकर खा जाते हो और माल की मुहब्बत में बुरी तरह पड़े हुए हो. हरगिज़ नहीं. जब ज़मीन को तोड़-तोड़ कर रेज़ा (कण) कर दिया जायेगा और तुम्हारा रब जाहिर होगा और फरिश्ते कतार-दर-कतार आऐंगे और जहन्नम उस रोज सामने लाया जायेगा, उस दिन इंसान को समझ आयेगी, मगर अब समझ में आने का मौक़ा कहां. आदमी कहेगा कि काश मैंने अपनी इस जिंदगी के लिये आगे कुछ भेजा होता. उस दिन अल्लाह जो अज़ाब देगा वैसा अजाब देने वाला कोई नहीं. और अल्लाह जैसा बांधेगा वैसा बांधने वाला कोई नहीं. ऐ! इत्मीनान वाली रूह! चल अपने रब की तरफ़, इस हाल में कि तू अल्लाह से राज़ी, अल्लाह तुझ से राज़ी, शामिल होजा मेरे बंदों में और दाख़िल होजा मेरी जन्नत में. (सूरः अल-फज्र, १५-३०)

अल्लाह वाले

ऐ ईमान बालो! सूद कई-कई हिस्सा बढ़ाकर न खाओ. और अल्लाह से डरो ताकि तुम कामयाब हो सको. और उस आग से डरो जो मुन्किरों के लिये तैयार की गई है. अल्लाह और रसूल का हुक्म मानो ताकि तुम पर रहम किया जाये. और अपने रब की बख़्शिश की तरफ़ दौड़ो और उस जन्नत की तरफ़ जिसकी व्यापकता सारे आसमान और ज़मीन में है और जो अल्लाह से डरने बालों के लिये तैयार की गई है. जो समृद्धि और तंगी दोनों में ख़र्च करते हैं. जो गुस्सा को पी जाने वाले है और लोगों से दरगुज़र करने वाले

हैं. ऐसे नेक लोग अल्लाह को बहुत पसंद हैं. और यह वह लोग हैं कि जब उनसे कोई बुरा काम हो जाता है, या अपनी जान पर कोई जुल्म कर बैठते हैं तो अल्लाह उन्हें याद आ जाता है. और वह अपने गुनाहों की माफी मांगने लगते हैं. और कौन माफ कर सकता है गुनाहों को अल्लाह के सिवा. और यह लोग अपने कर्मों पर जिद नहीं करते. हालांकि वह जान रहे हों, ऐसे लोगों का अच्छा बदला उनके रब के पास यह है कि वह उनको माफ़ कर देगा और ऐसे बागों में उन्हें दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी. कैसा अच्छा बदला है कर्म (सुकर्म) करने वालों के लिये. (सूरः आल-ए-इमरान, १३०ः१३६)

सुधार का तरीक़ा

और जो कुछ तुमको दिया गया है, वह महज़ दुनिया की जिंदगी का सामान है. और जो कुछ अल्लाह के पास है वह बेहतर है, और बाक़ी रहने वाला है. उन लोगों के लिये जो ईमान लाएं और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं. और जो बड़े गुनाहों और बेहयाई के कामों से बचते हैं और जब उन्हें गुस्सा आजाए तो वे माफ़ कर देते हैं. और जिन्होंने अपने रब की पुकार पर लब्बैक (समर्थन) कहा और उन्होंने नमाज़ क़ायम की और वह अपने काम आपसी मश्विरा से करते हैं. और उनको हमने जो रिज़्क दिया है, उसमें से खर्च करते हैं, और जब उनपर चढ़ाई की जाए तो वह उनका मुक़ाबला करते हैं. और बुराई का बदला वैसी ही बुराई है. फिर जो शख़्स माफ कर दे. और संशोधन/सुधार करे तो उसका अच्छा बदला अल्लाह के जिम्मे है. अल्लाह जालिमों को पसंद नहीं करता. और जो जुल्म के बाद बदला ले तो ऐसे लोगों पर कोई इल्जाम नहीं. इल्जाम के काबिल तो वह हैं जो लोगों पर जुल्म करते हैं।. और ज़मीन में नाहक़ ज्यादती करते है, ऐसे लोंगों के लिये दर्दनाक अजाब है. और जो शख़्स सब्र करे और माफ़ कर दे तो यक़ीनन यह हिम्मत का काम है. (सूरः अल-शुअरा, ३६-४३)

कामयाब व्यापार

ऐ ईमान वालो! क्या मैं तुमको ऐसा व्यापार बताऊं जो तुमको दर्दनाक अजाब से बचा दे. तुम ईमान लाओ अल्लाह की राह में. अपने मालों से और अपनी जानों से. यह तुम्हारे लिये बेहतर है. अगर तुम जानो अल्लाह तुम्हारे गुनाहों को माफ कर देगा. और तुमको ऐसे बाग़ों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी. और बेहतरीन घर चिर-स्थायी जन्नतों में, यह है: बड़ी कामयाबी और दूसरी चीज़ जो तुम चाहते हो. अल्लाह की तरफ़ से सहायता और जल्द फ़तह (विजय). और ईमान वालों को खुश्खबरी दे दो. ऐ ईमान लाने वालो! अल्लाह के मददगार बनो. जैसा कि ईसा इब्न-ए-मरियम ने हवारियों (अपने सहचरों) से कहा था कि कौन है अल्लाह की तरह मेरा मददगार. हवारियों ने जवाब दिया कि हम हैं अल्लाह के मददगार. बस बनी इस्राईल (इस्राइल की संतान) का एक गिरोह ईमान लाया और एक गिरोह ने इन्कार किया. बस हमने ईमान लाने वालों का समर्थन किया. और उनके दुश्मनों के मुक़ाबले में, और वह हावी हो गये. (सूरः अल-सफ़, १०:१४)

नेकी की हक़ीक़त

नेकी यह है कि तुम अपने चेहरे पूरब की तरफ़ कर लो या पश्चिम की तरफ. बल्कि नेकी यह है कि आदमी ईमान लाए आख़िरत के दिन पर और अल्लाह पर और फ़रिश्तों पर, और असामानी किताबों पर और पैगंबरों पर और अपना पसंदीदा माल रिश्तेदारों को दे दे और यतीमों को, और भिक्षुकों को और मुसाफिरों को और सवाल करने वालों को, मिस्कीनों को और गर्दन छुड़ाने के लिये. और वह नमाज़ क़ायम करे और ज़कात अदा करे. और वह लोग जब प्रतिज्ञा करे तो अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करें और सब्र करने वाले तंगी और मुसीबत के वक़्त और जिहाद के वक़्त. यही लोग सच्चे हैं. और यही वह लोग हैं जो अल्लाह से डरने वाले हैं. (सूर: अल-बक़रा, १७७)

अल्लाह की मेहमानी

क्या इन्कार करने वाले यह ख्याल रखते हैं कि वह मुझे छोड़ कर मेरे बंदों को अपना काम करने वाला बना लें. हमने इन्कार करने वालों की मेहमानी के लिये जहन्नम बना रखा है. कहो, क्या हम तुमको बताएं कि कर्म के ऐतिबार से सबसे ज़्यादा घाटे वाले कौन हैं. यह वह लोग हैं, जिनकी सारी कोशिशें दुनिया को ज़िंदगी में भटकती रही और वह समझते रहे कि वह बहुत कुछ अच्छा काम कर रहे हैं यह वह लोग हैं जिन्होंने अपने रब की निशानियों का इन्कार किया और उसकी मुलाकात का यक़ीन न किया. बस उनके सुकर्म कारत हो गये. कयामत के दिन हम उनको कोई वजन न देंगे. उनका बदला जहन्नम है. इस इन्कार के कारण से जो उन्होंने किया और उन्होंने मेरी निशानियों और मेरे पैग़ंबरों का मज़ाक़ उड़ाया. जो लोग ईमान लाये और नेक कर्म किया उनकी मेज़बानी के लिये फिरदौस के बाग होंगे जिनमें वह हमेशा रहेंगे और कभी उससे निकलना न चाहेंगे. कहो, अगर समुंदर में रब की बातें लिखने के लिये रौशनाई बन जाये तो समुंदर ख़त्म हो जायेगा. मगर मेरे रब की बातें खत्म न होंगी. चाहे हम उतनी ही रौशनाई और ले आए. कहो, कि मैं तो एक इंसान हूं, तुम्हारे ही जैसा, मेरी तरफ़ वह्य की गई है कि तुम्हारा माबूद एक ही माबूद है, बस जो शख़्स अपने रब से मिलने का उम्मीदवार हो उसको चाहिये कि नेक कर्म करे. और बंदगी में अपने रब के साथ किसी और को शरीक न करे. (सूर: अल-कहफ़ १०२-११०)

मोमिन की सामाजिक-आर्थिक ज़िंदगी

ऐ ईमान वालो जब पुकारा जाये नमाज़ के लिये जुमा के दिन तो अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ दौड़ो. और खरीद-बिक्री छोड़ दो. यह तुम्हारे लिये बेहतर है. अगर तुम जानो, फिर जब नमाज पूरी हो जाये तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह की कृपा तलाश करो. और अल्लाह को बहुत याद करो, ताकि तुम कामयाब हो सको. और जब उन्होंने व्यापार और खेल तमाशा देखा

तो उसकी तरफ़ दौड़ पड़े और तुमको खड़ा छोड़ दिया. उनसे कहो कि जो कुछ अल्लाह के पास है, वह बेहतर है खेल तमाशे से और तिजारत से. और अल्लाह सब से बेहतरीन रिज़्क देने वाला है. (सूर: अल-जुमअ ११-१९)

फ़िरदौस वाले

कामयाब हो गये ईमान लाने वाले, जो अपनी नमाज़ में झुकने वाले हैं और जो बेकार चीज़ों से दूर रहते हैं. और जो ज़कात अदा करते हैं. और जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं, सिवा अपनी पत्नियों के या उन औरतों के जो उनकी मिल्कियत में हैं, कि उनपर उन्हें कोई निंदा नहीं. मगर जो इसके अलावा चाहें तो वह हद से बढ़ने वाले हैं. और जो अपनी अमानतों और अपनी प्रतिज्ञा का लिहाज़ रखते हैं और जो अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं, यही लोग वारिस हैं, जो फ़िरदौस की विरासत पाएंगे, वह उसमें हमेशा रहेंगे. (सूर: अल-मोमिनून, १-११)

सब कुछ अल्लाह के लिये

अल्लाह ने ईमान वालों से उनका जान और माल खरीद लिया है, इस क़ीमत पर कि उनके लिये जन्नत है, वह अल्लाह की राह में लड़ते हैं और फिर मारते हैं और मारे जाते हैं. उनसे अल्लाह का वायदा है तौरात में, इंजील (बाइबल) में और कुरआन में, और कौन है जो अल्लाह से बढ़कर अपने वायदे का पूरा करने वाला हो. बस खुशी मनाओं अपने इस मामले पर जो तुमने अल्लाह से किया है, यही सबसे बड़ी कामयाबी है. वह है अल्लाह की तरफ़ पलटने वाले, उसकी इबादत करने वाले, उसका शुक्र करने वाले, उसकी खातिर ज़मीन में गर्दिश करने वाले, उसके आगे रूकूअ और सज्दा करने बाले, नेकी का हुक्म देने वाले और बुराई से रोकने वाले और अल्लाह की सीमाओं की हिफाजत करने वाले, और खुश खबरी दे दो ईमान लाने वालों की. (सूर: अल-तौबा १११-११२)

मोमिन अल्लाह का वृक्ष है

क्या तुमने नहीं देख कि अल्लाह ने कैसी मिसाल बयान की, कलिमा-ए-तय्यिबाः (अच्छा वृक्ष) उसकी जड़ गहरी जमी हुई है, और शाखाएं आसमान तक पहुंची हुई हैं वह हर वक़्त अपने रब के हुक्म से अपना फल देता है, यह मिसाल अल्लाह लोगों के लिये बयान करता है, ताकि वह सोचें. और कलिमा-ए-ख़बीसा की मिसाल शजर-ए-ख़बीसा (बुरे वृक्ष) की तरह है, जो ज़मीन के ऊपर से उखाड़ लिया जाये. उसके लिये कोई ठहराओ नहीं. अल्लाह ईमान वालों को एक प्रमाणिक वचन के ज़रिये दुनिया व आख़िरत में जमाओ प्रदान करता है, और ज़ालिमों को भटका देता है, और अल्लाह चाहता है, जो करता है. (सूरः इब्राहीम २४-२७)

अच्छी नसीहत

अल्लाह तुमको हुक्म देता है कि अमानतें उनके अह्ल (हक़दार) के हवाले करो और जब लोगों के बीच फैसला करो तो इंसाफ के साथ फैसला करो. बेशक अल्लाह तुमको बहुत अच्छी बात के लिये नसीहत करता है. और यक़ीनन अल्लाह सब कुछ सुनने वाला और देखने वाला है. (सूरः अल-निसाअ ५८) जिसको डर होगा वह नसीहत पकड़ेगा. और इससे गुरेज़ करेगा वह बदवख़्त जिसको बड़ी आग में जाना है. फिर वह न उसमें मरेगा और न उसमें जियेगा. कामयाब हो गया वह जिसने पाकीज़गी अपनायी और अपने रब का राम याद किया, फिर नमाज़ अदा की. मगर तुम लोग दुनिया की जिंदगी को तरजीह (प्राथमिकता) देते हो. हालांकि आख़िरत ज़्यादा बेहतर है, और बाक़ी रहने वाली है. (सूरः अल-आला १०-१७)

तबाही किसके लिये

तबाही उस शख़्स की जो ऐब निकालता है और ग़ीबत (चुगली/शिकायत/निंदा) करता है. जिसने माल जमा किया और उसको गिन-गिन कर रखा. वह ख्याल करता है कि उसका माल हमेशा उसके पास रहेगा. हरगिज नहीं. वह शख़्स तो रौंदने बाली जगह में फेंक दिया जायेगा. और तुम क्या जानो कि वह रौंदने वाली जगह क्या है. वह अल्लाह की सुलगाई हुई आग है, जो दिलों तक जा पहुंचेगी. वह उनपर बंद कर दी जायेगी और ऊंचे-ऊंचे सुतूनों (खंभों) में. (हम्ज़ा)

निशानियों को झुठलाने वाले

जो शख़्स मेरी नसीहत से मुंह फेरेगा, उसके लिये है तंग ज़िंदगी और कयामत के दिन हम उसको अंधा उठाएंगे. वह कहेगा कि ऐ मेरे रब क्यों मुझको तूने अंधा उठाया, दुनिया में तो मैं आंख वाला था, अल्लाह फ़रमायेगा, हां, इसी तरह पहुंची तुम्हें तुम्हारे पास हमारी निशानियां, फिर तुमने उनको भुला दिया. उसी तरह आज तुमको भुलाया जा रहा है. इसी तरह हम हद से गुज़रने वाले और अपने रब की निशानियों को न मानने वालों को बदला देते हैं. और आख़िरत का अज़ाब बड़ा सख्त और बहुत बाक़ी रहने वाला है. (सूरः ताहा, १२४-१२७)

इंसाफ़ की गवाही

ऐ ईमान वालो अल्लाह के लिये खड़े होने वाले और इंसाफ के लिये गवाही देने वाले बनो और किसी गिरोह की दुश्मनी तुमको इतना न भड़का दे कि तुम इंसाफ को छोड़ दो, इंसाफ़ करो. यही बात 'तकवा' से ज़्यादा क़रीब है और अल्लाह से डरो, अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो. अल्लाह का वायदा है ईमान वालों से और नेक कर्म करने वालों से कि उनके लिये बड़ी बख्शिश और सवाब (अच्छा बदला) है. और जिन लोगों ने इन्कार किया

और हमारी आयतों को झुठलाया तो वही हैं दोजख़ में जाने वाले. (सूरः अल-माइदा, ८-१०)

मतभेद नहीं

ऐ ईमान वालो जब किसी गिरोह से तुम्हारा मुकाबला हो तो साबित कदम रहो और अल्लाह को बहुत ज़्यादा याद करो, उम्मीद है कि तुम कामयाब होगे. और अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करो, और आपस में झगड़ा न करो, वर्ना तुम कमजोर हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जायेगी और सब्र करो. बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है. और तुम उन लोगों जैसे न बनो जो अपने घर से इतराते हुए और लोगों को दिखाते हुए निकले, और वह अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और अल्लाह उनके कर्मों को घेरे में लिये हुए है. (सूर: अल-इन्फाल, ४५-४७)

इस्लामी सामाजिकता

ऐ ईमान लाने वालो अगर कोई फासिक़ (अलगाववादी) तुम्हारे पास कोई खबर लेकर आए, तो उसकी तफतीश (जांच) कर लो, ऐसा न हो कि तुम किसी गिरोह पर नादानी से जा पड़ो फिर तुम्हें अपने किये पर पछतावा हो और जान लो कि तुम्हारे बीच अल्लाह का रसूल है. अगर वह बहुत से मामलों में तुम्हारी बात मान ले, तो तुम मुश्किल में पड़ जाओगे मगर अल्लाह ने तुम्हारे अंदर ईमान की मुहब्बत डाल दी और उसको तुम्हारे लिये दिलपसंद बना दिया और कुफ्र, और गुनाह और अवज्ञा से तुमको पृथक कर दिया, यही लोग नेक रास्ते पर हैं. अल्लाह की कृपा और एहसान से और अल्लाह ज्ञान वाला और हिकमत वाला है. और अगर मुसलमानों में दो गिरोह आपस में लड़ जाएं तो उनके बीच सुलह करा दो. फिर अगर उनमें से एक गिरोह दूसरे गिरोह पर ज्यादती करे तो ज्यादती करने वालों से लड़ों यहां तक वह अल्लाह के हुक्म की तरफ़ पलट आए. फिर अगर वह पलट आए तो उनके बीच न्याय के साथ मिलाप करा दो और इंसाफ करो क्योंकि अल्लाह इंसाफ करने वालों

को पसंद करता है. बेशक मुसलमान एक दूसरे के भाई हैं, बस अपने भाइयों के बीच संबंधों को दृढ़ करो और अल्लाह से डरो, उम्मीद है कि तुम पर रहम किया जायेगा. ऐ ईमान वालो एक गिरोह दूसरे गिरोह का मजाक़ न उड़ाए, हो सकता है कि वह लोग इन से बेहतर हों और न औरतें दूसरी औरतों का मज़ाक उड़ाए, हो सकता है कि वह उन से बेहतर हों. आपस में एक दूसरे पर ऐब न लगाओ और न एक दूसरे को बुरे नाम से याद करो, गुनहगारी बुरा नाम है ईमान के बाद और जो बाज न आए तो ऐसे ही लोग जालिम हैं. ऐ ईमान वालो बदगुमानियों से बचो. यक़ीनन बाज गुमान गुनाह होते हैं, और किसी का भेद न टटोलो, और एक दूसरे को पीठ पीछे बुरा न कहो, क्या तुम में से कोई इसको पसंद करेगा कि वह अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाये, तुम इससे खुद ही घिन करते हो और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला मेहरबान है. ऐ लोगो हमने तुमको एक मर्द एक औरत से पैदा किया, और फिर तुम्हारे कबीले और बिरादरियां बना दीं, ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो यक़ीनन अल्लाह के नजदीक सबसे ज़्यादा इज्जत वाला वह है, जो तुम्हारे अंदर सबसे ज़्यादा तक़वा वाला (इबादत करने वाला परहेजगार) है. बेशक अल्लाह ज्ञानवाला, खबर रखने वाला है. (सूर: अल-हिजरात ६-१३)

अल्लाह की तरफ़ दावत

अपने रब के रास्ते की तरफ़ पुकारो हिकमत और उमरा नसीहत के साथ, और लोगों से बहस करो ऐसे तरीके से जो बेहतर हो. तुम्हारा रब बेहतर जानता है कि कौन उसकी राह से भटका हुआ है और कौन सीधे रास्ते पर है. और अगर तुम लोग बदला लो तो बस उतना ही ला जितनी कि तुम पर ज्यादती की गई है. और अगर तुम सब्र करो तो यकीनन यह सब्र करने वालों के लिये बेहतर है. और सब्र से काम लो तुम्हारा सब्र अल्लाह के लिये ही है, और उनपर ग़म न करो और उनकी करावाइयों पर दिल छोटा न करो. अल्लाह उन लोगों के साथ है जो उससे डरें और जो नेक कर्म करते हैं. (सूर: अन-नह्ल १२५-२८)

अल्लाह की बड़ाई करो

ऐ ओढ़ कर लेटने वाले उठ और लोगों को खबरदार कर और अपने रब की बड़ाई का ऐलान कर और अपने आप को पाक रख और गंदगी से दूर रह. और ऐसा न कर कि एहसान करे और बहुत बदला चाहे. और अपने रब की खातिर सब्र कर. फिर जब सूर में फूंक मारी जायगी, वह दिन बड़ा ही मुश्किल दिन होगा, मुन्किरो के लिये आसमान न होगा. (१:१०) हरगिज़ नहीं, कसम है चांद की और रात की जब वह पलटती है, और सुबह की जबकि वह रौशन होती है. दोज़ख बड़ी चीज़ों में से एक है. इंसान के लिये डरावा, तुममें से उस शख़्स के लिये जो आगे बढ़ना चाहे या पीछे रह जाना चाहे. हर आदमी अपने किये कामों में फंसा है. दायी तरफ़ वालों के सिवा, वह बाग़ों में होंगे. वह मुजरिमों से पूछेंगे. तुमको क्या चीज़ दोजख़ में ले गई. वह कहेंगे हम नमाज़ पढ़ने वालों में न थे और हम मोहताज को खाना नहीं खिलाते थे. और हम बातें बनाने वालों के साथ बातें बनाते थे. और हम इंसाफ के दिन को झुठलाते थे. यहां तक कि आ पहुंची हम पर वह यक़ीनी बात. उस वक़्त सिफारिश करने वालों की सिफ़ारिश उनके काम न आएगी. (सूरः अल-मुदस्सिर ३२-४८)

आख़िरत बेहतर है

कामयाब हो गया वह जिसने पाकी अख्तियार की. और अपने रब का नाम याद किया और नमाज़ पढ़ी. मगर तुम लोग दुनिया की ज़िंदगी को प्राथमिकता देते हो, हालांकि आख़िरत बेहतर है और बाक़ी रहने वाली है. यही बात पिछली किताबों में भी कही गई थी, इब्राहीम और मूसा की किताबों में. (अल-आला १५-१८)

जिनकी कोशिशों का सम्मान हुआ

हमने इंसान को पैदा किया पानी की एक मिली जुली बूंद से ताकि हम उसका इम्तिहान लें. बस हमने उसको सुनने वाला और देखने वाला बनाया. हमने उसको रास्ता दिखाया चाहे वह कृतज्ञ बने या कृतघ्न. हमने कृतघ्नों के लिये ज़ंजीरें और तौक़ और भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है. बेशक नेक लोग शराब के ऐसे प्याले पियेंगे जिनमें कपूर के चश्मे की आमेजिश (मिलावट) होगी. उस चश्मे (नहर) से अल्लाह के बंदे पियेंगे. वह उसकी शाखें निकालेंगे जिस तरफ़ चाहेंगे. यह वह लोग होंगे जो नज़र पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं जिस दिन की आफत हर तरफ़ फैली हुई होगी. और वह अल्लाह की मुहब्बत में मिस्कीन और यतीम को और कैदी को खाना खिलाते हैं. हम तुमको सिर्फ अल्लाह की खातिर खिला रहे हैं. हम तुमसे न कोई बदला चाहते हैं, न शुक्रिया. हम को तो अपने रब से उस दिन के अजाब का डर लगा हुआ है. जो सख्त मुसीबत का बहुत दीर्घावाधिक दिन होगा. तो अल्लाह ने उनको उस दिन की आफत से बचा लिया. और उसको ताज़गी और सुरूर से नवाज़ा. और उन्होंने जो सब्र किया उसके बदले में उनको जन्नत और रेशमी लिबास प्रदान किया. वहां वह ऊंची मसनदों पर टेक लगाये हुए होंगे. न उनको धूप की गर्मी सतायेगी न जाड़े की सर्दी. जन्नत की छाओं उनपर झुकी हुई साया कर रही होगी. और उसके फल हर वक़्त उसकी पहुंच के भीतर होंगे. और उनके सामने चांदी के बर्तन और शीशे के प्याले गर्दिश में होंगे. वह उपयुक्त ढ़ंग से भरे होंगे. और वहां उनको एक और शराब के प्याले पिलाये जाएंगे, जिसमें सोंठ की (सुगंध वाली) आमेज़िश होगी. यह उसमें एक चश्मा है, (नहर), जिसको सलसबील कहा जाता है. और उनकी खिदमत के लिये ऐसे लड़के दौड़ते फिर रहे होंगे, जो बिखेर दिये गये हैं. वहां तुम जिधर भी नजर डालोगे अजीम नेमत और अज़ीम बादशाही देखेगे. उनके ऊपर बारीक रेशम के सब्ज लिबास और अतलस व दीबा के कपड़े होंगे. उनको चांदी के कंगन पहनाएं जाएंगे. और उनका रब उनको पाकीज़ा शर्बत पिलायेगा. बेशक यह तुम्हारे कर्मो का बदला है और तुम्हारी

कोशिश स्वीकृत हुई. (सूर: अल-दहर)

ईनाम और सज़ा का दिन

जब आसमान फट जायेगा और जब तारे बिखर जाएंगे और जब समुंदर फाड़ दिये जाऐंगे, और जब कबरें खोल दी जायेंगी. उस वक़्त हर आदमी जान लेगा जो उसने आगे भेजा और जो उसने पीछे छोड़ा. ऐ इंसान किस चीज़ ने तुझको अपने रब-ए-करीम के बारे में धोके में डाल दिया जिसने तुझको पैदा किया. फिर तुझे दुरूस्त किया और तुझे आपसी संबंध रखने वाला बनाया. जिस सूरत में चाहा तुझको जोड़ कर तैयार किया. हरगिज नहीं बल्कि तुम लोग इनाम और सज़ा को झुठलाते हो. हालांकि तुम्हारे ऊपर निगरां नियुक्त हैं. सम्मानीय लिखने वाले जो तुम्हारे हर कर्म को जानते हैं. बेशक नेक लोग नेमतो में होंगे, और बेशक बुरे लोग जहन्नम में जाएंगे. इनाम के दिन वह उसमें दाखिल होंगे और वह उससे हरगिज़ गायब न हो सकेंगे. और तुम क्या जानते हो कि वह ईनाम का दिन क्या है? हां तुम क्या जानते हो कि वह ईनाम का दिन क्या है? यह वह दिन है जबकि एक शख़्स के लिये दूसरों के वास्ते कुछ करना संभव न होगा. और उस दिन फैसला सिर्फ अल्लाह के अधिकार में होगा. (अल-अनफ़ितार)

ख़ुदा को स्वीकार्य मज़हब

आख़िरत का घर हम उन लोगों के लिये खास कर देंगे जो दुनिया में न बड़ा बनना चाहें और न फसाद करना, और आक़िबत मुत्तक़ी लोगों (परहेजगारों) के लिये ही है. जो कोई भलाई लेकर आएगा उसके लिये उससे बेहतर भलाई है. और जो बुराई लेकर आए तो बुराइयां करने वाले वही सजा पाएंगे जो वह करते थे. (क़सस, ८३-८४) जिस शख़्स ने अवज्ञा की और दुनिया की जिंदगी को प्राथमिकता दी उसका ठिकाना दोज़ख़ है. जो शख़्स अपने रब के सामने खड़ा होने से डरा और उत्तेजना को बुरी इच्छाओं से रोका, उसका ठिकाना जन्नत है. (अल नाज़िआत, ३८-४१) जो कोई इस्लाम

के सिवा किसी और दीन को अपनायेगा वह हरगिज उससे स्वीकार न किया जायेगा, और वह शख़्स आख़िरत में नाकाम और नामुराद होगा. (सूर: आल-ए-इमरान, ८५)

दुआएं

सब तारीफ सिर्फ़ अल्लाह के लिये है, जो तमाम कायनात का परवरदिगार है. बेहद मेहरबान, हिदायत रहम वाला है. बदला के दिन का मालिक है. ख़ुदाया हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझसे ही मदद चाहते हैं. हमको सीधा रास्ता दिखा, उन लोगों का रास्ता जिनपर तूने ईनाम फ़रमाया जो तेरे सजावार नहीं हुए, जो भटके हुए नहीं हैं. (सूर: अल-फ़ातिहा)

ऐ हमारे रब

ऐ हमारे रब हमारी भूल और हमारी गलतियों पर हमको न पकड़. ऐ हमारे रब, हम पर वह बोझ न डाल जो तूने हमसे पहले लोगों पर डाला था. ऐ हमारे रब, हम पर वह बोझ न रख जिसको उठाने की हमें ताकत नहीं. हमको माफ कर, हमें बखश दे. हम पर रहम फ़रमा, तू हमारा मौला है, बस तू इन्कार करने वालों के मुकाबले में हमारी मदद कर. (अल बक़रा, २८६) ऐ अल्लाह सलतनत के मालिक, तू जिसको चाहे सलतनत दे, और जिससे चाहे सलतनत छीन ले. तू जिसको चाहे इज़्ज़त दे और जिसको चाहे ज़लील (अपनानित) करे. सब खूबी तेरे हाथ में है. बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर (प्रभुत्व रखता है. तू रात को दिन में दाख़िल करता है. और दिन को रात में दाखिल करता है, तू मुर्दा से जिंदा को निकालता है, बेहिसाब रिज़्क प्रदान करता है. (सूरः आल-ए-इमरान, २६-२७)

हमको बचा ले

ऐ हमारे रब हमको हमारी पत्नियों और अपनी औलाद की तरफ़ से आंखों को ठंडक दे. और हमको परहेज़गारों का इमाम बना. (अल-फुर्क़ान,

७४) ऐ मेरे रब मुझे नसीब कर कि मैं तेरे एहसान का शुक्र (धन्यवाद) करूं, जो तुने मेरे ऊपर और मेरे वालिदैन (माता-पिता) पर किया है और यह कि मैं नेक काम करूं जो तुझको पसंद आए. और अपनी रहमत से मुझको अपने परहेजगार सच्चे बंदों में दाखिल कर ले. (अल-नम्ल, १९) ऐ हमारे रब तेरा रहम और तेरा ज्ञान हर चीज़ पर छाया हुआ है, तू उन लोगों को बख़्शा दे जिन्होंने तौबा की और तेरे रास्ते पर चले और उनको दोज़ख़ के अजाब से बचा ले. ऐ रब, और उन्हें दाखिल कर हमेशा रहने वाली जन्नतों में जिनका वायदा तूने उनसे किया है, और उनके माता-पिता और उनकी पत्नियों और उनकी औलाद में से जो सच्चे हों उनको भी, तू जबर्दस्त हिकमत वाला है. और बचा ले उनको खराबियों से और जिसको तू उस दिन खराबियों से बचा ले उसपर तूने बड़ा रहम किया. और यही बड़ी कामयाबी है. (अल मोमिन, ७-९)

हमारी मदद कर

ऐ हमारे रब, हमको दुनिया में भलाई दे, और हमको आख़िरत में भलाई दे. और हमको आग के अजाब से बचा. (अल बक़रा, २०१) ऐ हमारे रब, हमारे ऊपर सब्र उडेल दे, और हमारे कदमों को जमा दे. और मुन्किर लोगों के ऊपर हमारी मदद कर. (अल बक़रा, २५०) ऐ हमारे रब, हमारे दिलों को हिदायत देने के बाद फेर न दे. और हमें अपने पास से रहमत प्रदान कर. बेशक तू ही सब कुछ देने वाला है. (सूरः आल-ए-इमरान, ८) ऐ हमारे रब, हम ईमान लाये, हमारे गुनाहों को बख़्शा दे और हमको आग के अज़ाब से बचा. (आल-ए-इमरान, १६)

हमारे सीने (छाती) को पाक कर दे

ऐ हमारे रब, हम को बख़्शा दे. और हमारे उन भाइयों को भी जो हमसे पहले ईमान लाये और हमारे दिलों में ईमान वालों के लिये कुदरत (ईर्ष्या) न रख. ऐ हमारे रब, तू बहुत मेहरबान और रहम वाला है. (अल-हश्र, १०) ऐ हमारे रब हमने तेरे ऊपर भरोसा किया और हमने तेरी तरफ़ खुद को

जोड़ा और तेरी ही तरफ़ वापस आना है. ऐ हमारे रब, हमें मुन्किर लोगों के लिये फितना (विवाद) न बना और हमें बख़्श दे. बेशक तू जबर्दस्त है. हिकमत वाला है. (४-५). ऐ हमारे रब, हमारे लिये नूर को कामिल दे, और हमको बख़्श दे. तू हर चीज़ पर प्रभुत्व रखता है. (अल-तहरीम, ८)

अच्छा ख़ात्मा कर

ऐ हमारे रब तूने यह सब बेमकसद नहीं बनाया, तू पाक है. बस हमको आग के अज़ाब से बचा. ऐ हमारे रब तूने जिसको आग में डाला उसको तूने वास्तव में रूस्वा कर दिया, और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं, ऐ हमारे रब, हमने एक पुकारने वाले को सुना, जो ईमान की तरफ़ बुला रहा था कि अपने रब पर ईमान लाओ. बस हम ईमान लाये. ऐ हमारे रब हमारे गुनाहों को बखश दे. और हमारी बुराइयों को हमसे दूसर कर दे. और हमारा खात्मा नेक लोगों के साथ कर. ऐ हमारे रब, तूने जो वायदे अपने रसूलों के जरिये हमसे किये हैं. उनको मारे साथ पूरा कर, और कयामत के दिन हमको रूसवाई में न डाल. बेशक तू अपने वायदे के ख़िलाफ़ करने वाला नहीं. (आल-ए-इमरान, १९१ः९४)

हम पर रहम कर

ऐ मेरे रब, मुझको नमाज़ क़ायम करने वाला बना और मेरी औलाद भी। ऐ रब, मेरी दुआ कुबूल कर, ऐ हमारे रब मुझको और मेरी माता-पिता को और तमाम ईमान वालों को उस दिन माफ़ कर दे जबकि हिसाब क़ायम होगा. (सूर: इब्राहीम, ४०:४१). ऐ मेरे रब तू मेरे वालिदैन (माता-पिता) पर रहम कर, जिस तरह उन्होंने मुझे पाला, जबकि मैं छोटा था. (बनी इस्राईल, २५)

हमको विवाद न बना

ऐ हमारे रब, हमने अपनी जानों पर जुल्म किया, और अगर तू हमको माफ न करे और हम पर रहम न करे तो हम घाटा उठाने वालों में से हो

जाएंगे. (अल-आराफ़, २३) ऐ हमारे रब, हमारे ऊपर सब्र उडेल दे, और हमको इस हाल में दुनिया से उठा कि हम तेरे फरमाबरदार (आज्ञाकारी) हों. (अल-आराफ़, १२६) ऐ रब तू ही हमारा मददगार है, बस हमको बख़्श दे. और हमपर रहम कर, और तू सबसे अच्छा बख़्शने वाला है. तू हमारे लिये इस दनिया में भी भलाई लिख दे और आख़िरत में भी. हमने तेरी तरफ़ रूजूअ (ध्यान) किया. (अल-आराफ़), १५५-५६). ऐ हमारे रब, हमें जालिम लोगों के लिये विवाद न बना. और अपनी रहमत से हमको मुन्किरों से निजात दे. (सूरः सूनुस, ८५-८६) ऐ ज़मीन और असामान के पैदा करने वाले, तू ही मेरा मित्र है, दुनिया में और आख़िरत में मेरा ख़ात्मा इस्लाम पर कर, और मुझको नेकों के साथ शामिल कर दे. (सूरः यूसुफ, १०१)

हमारे काम को दुरुस्त कर दे

ऐ मेरे रब, तू मुझको जहां ले जा सच्चाई के साथ ले जा, और जहां से मुझको निकाल सच्चाई के साथ निकाल, और अपनी तरफ़ से एक शक्ति को मेरा मददगार बना दे. (बनी-इस्राईल, ८०) ऐ हमारे रब हमें अपने पास से रहमत दे. और हमारे लिये हमारे काम में दुरूस्ती फ़रमा. (अल-कहफ़, १०)

मुझे अकेला न छोड़

ऐ मेरे रब, मेरा सीना ख़ोल दे. और मेरे काम को मेरे लिये आसान कर दे. और मेरी जुबान की गिरह खोल दे, ताकि लोग मेरी बात समझ लें. (ताहा २५-२८) ऐ मेरे रब, मुझे ज़्यादा ज्ञान प्रदान कर. (ताहा, ११४) ऐ रब, मुझे बीमारी लग गई है और तू सबसे बड़ा मेहरबान है. (अल-अंबिया, ८३) ऐ मेरे रब मुझे अकेला न छोड़ दे, और तू सबसे अच्छा बारिस है. (अल-अंबिया, ८९) ऐ मेरे रब, मुझे बरकत वाली जगह में उतार और तू सबसे बेहतर उतारने वाला है. (अल-मोमिनून, २९) ऐ मेरे रब, अपने यहां जन्नत में मेरे लिये एक घर बना दे. (अल-तहरीम, ११) ऐ मेरे रब, जो भलाई तू मेरे ऊपर उतारे, मैं उसका मोहताज हूं. (अल-क़सस, २४) ऐ मेरे रब,

फसाद करने वालों के मुकाबले में मेरी मदद कर. (अल-अनकबूत, ३०) ऐ रब, मैं मग़लूब (अधीनस्थ) हो गया. बस तू मेरा बदला ले ले. (अल-क़मर, १०)

अज़ाब से बचा

ऐ मेरे रब मैं तेरी पनाह चाहता हूं शैतानों की उकसाहट से और ऐ मेरे रब मैं तेरी पनाह चाहता हूं इससे कि वह मेरे पास आएं. (सूरः अल-मोमिनून, ९८-९९) ऐ हमारे रब हम ईमान लाये, तू हमको बख़्श दे, और हम पर रहम कर, और तू सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान है. (सूरः अल-मोमिनून, १०९) ऐ हमारे रब जहन्नम के अजाब (यातना) को हम से मिटा दे. बेशक उसका अज़ाब पकड़ लेने वाला है. (सूरः अल-फ़ुर्क़ान, ६५)